

# महिला समाख्या : शक्तियात्रा

वीणा शिवपुरी

महिला समाख्या कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यों में से खास उद्देश्य है कि शिक्षा और संगठन के द्वारा गरीब-देहाती औरतों को सामूहिक सक्रियता के लिए तैयार करना। इसमें तीन मुद्दे उभरते हैं शिक्षा, संगठन और सक्रियता। इन्हीं के लिए महिला संघों का गठन किया जाता है। ये महिला संघ मजबूत और कार्यशील बनें उसके चार चरण होते हैं।



- सबसे पहले गांव की औरतों के साथ सम्बन्ध और सम्पर्क बढ़ाने का चरण होता है। इस समय सहयोगिनियां अलग-अलग औरतों से या समूहों से मिलती हैं। आपस में अनौपचारिक रूप से बातें होती हैं।
- दूसरे चरण में संघ एक स्वरूप लेने लगता है। नियमित सदस्य बनती हैं। नियमित बैठकें होने लगती हैं। संभव है कि इस समूह का नाम रख लिया जाए।

- इसके बाद मजबूती का चरण आता है। जब बैठकों के दिन निश्चित होते हैं। चर्चा के मुद्दे निश्चित होते हैं। इन चर्चाओं में कठिन मुद्दे उठाए जाते हैं। गर्माग्रिम बहस होती है।
- अन्तिम चरण है जिसमें संघ स्वतंत्र रूप से सहयोग इकट्ठा कर सकते हैं। अपने आसपास के वातावरण को प्रभावित कर सकते हैं। किसी मुद्दे पर कार्रवाई कर सकते हैं।

यह बात नहीं है कि मजबूत व सशक्त संघ हमेशा वैसे ही रहते हैं। इनमें ऊंच-नीच आती रहती है, लेकिन खास बात यह है कि कमजोर पड़ने पर वे उसके कारण खोज सकें। कारणों को दूर करके फिर से उठ खड़े हों।

## मजबूत संघों की विशेषताएं :

- इन-संघों की समाज में जगह है।
- उनकी सक्रिय सामाजिक पहचान है।
- जहां सामूहिकता से औरतें ताकत पाती हैं।
- जहां औरतों ने अपने दर्जे के बारे में एक नज़रिया विकसित किया है।
- उनके साझे लक्ष्य तथा उनके बारे में साझी समझ बन चुकी है।
- सामाजिक तथा क़ानूनी मंचों पर मान्यता मिली है।
- वे पहल करते हैं।
- संघों ने विकल्प तैयार किए हैं।

### कमजोर संघों के लक्षण :

- जो पूरी तरह महिला समाख्या के मूल्यों तथा उसके दर्शन को न समझते हों।
- ऐसी सखियां हों जो दबाव डालती हों या जरूरत से ज्यादा सक्रिय हों और सामूहिकता को उभरने न देती हों।
- सखियों के अपने स्वार्थ/हित हों।
- बेअसर सहयोगिनियां, जो सही मुद्दे न उठाती हों। गांव वाले उन्हें स्वीकार न करते हों।
- जानकारी का अभाव हो।
- सबको आपस में जोड़ने वाला तत्व न हो और नेतृत्व भी ठीक न हो। जो संघ सिर्फ किसी मुद्दे पर जुड़े हों।
- जहां सहयोगिनियां दफ्तरी काम में ही व्यस्त रहती हों।
- निष्क्रियता और अपने आपसे पूरी तरह संतुष्टि।
- अनेक नेता हों।

### अपने भीतर झांकना

कुछ सालों काम करके महिला समाख्या ने अपना मूल्यांकन किया। उससे जानकारी मिली कि गांव के महिला संघ उतने मजबूत और सक्रिय नहीं हैं जितनी कल्पना की थी। सिर्फ सशक्त सहयोगिनी और सखी होना काफी नहीं है। गांव के स्तर पर जब आम औरतें सशक्त होंगी, जब उनके बीच से नेतृत्व उभरेगा तभी कार्यक्रम सफल माना जा सकता है। इस प्रकार सभी राज्यों में सीधे धरातलीय संघों पर ध्यान केन्द्रित करने का फैसला लिया गया। सहयोगिनियों के काम और भत्ते तो लगभग सभी राज्यों में एक हैं, लेकिन सखियों की भूमिका और भत्ते उनकी अपनी सामूहिक समझ और



सशक्तता के आधार पर अलग-अलग हैं। गुजरात में महिला संघों की स्वायत्तता का और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने का सवाल भी उठाया गया। 1993 में राष्ट्रीय मूल्यांकन में महिला संघों को सशक्त करने का निर्णय लिया गया था। उन्हें सशक्त करने के रास्ते/मुद्दे जगह के हिसाब से अलग-अलग हो सकते हैं। विभिन्न राज्यों और उनके विभिन्न जिलों की समस्याएं अलग-अलग हैं। औरतें तभी एकजुट होती हैं और संघ मजबूत होता है जब उनकी आपसी समझ एक जैसी हो। उनके सरोकार और मुद्दे साझे हों।

### सशक्तता के रास्ते

#### साक्षरता

उत्तर प्रदेश में साक्षरता शिविरों के ज़रिए साक्षरता आगे बढ़ी। औरतों के बीच इसकी मांग बढ़ी। वे साक्षर होना चाहती थीं। उन्होंने सुविधाओं की मांग की। इस प्रकार सरकार की जनता के प्रति जवाबदेही को ललकारा गया। उनकी पढ़ाई की सामग्री भी उस जगह के हिसाब से बनती है। जैसे सहारनपुर में शारीरिक हिंसा की बात वाराणसी में पंचायती राज, टिहरी में पर्यावरण और बांदा में पानी की समस्या से जुड़े पाठ पढ़ाए जाते हैं। महिला संवेदी पठन सामग्री इस्तेमाल

की जाती है। जगह की समस्याओं के हिसाब से नई किताबें तैयार की जाती हैं। प्रौढ़ शिक्षा तथा किशोरियों की कक्षाएं भी औरतों को सशक्त करने का ज़रिया रही हैं।

### बाल केन्द्र

देहाती औरतों को सशक्त करने के लिए उन्हें सहूलियतें देना भी ज़रूरी है। उन्हें बच्चों की देखभाल से कुछ समय के लिए फुरसत दिलाई गई। जगह-जगह बाल देखरेख केन्द्र खुले। उनसे न सिर्फ बच्चों का स्वास्थ्य और पोषण स्तर सुधरा बल्कि माताओं के जीवन स्तर में सुधार आया। काम का बोझ, चिन्ता, तनाव कम हुआ। घर की आमदनी बढ़ी। ये सुविधाएं खुद संघ की औरतों ने मिलजुलकर विकसित कीं। कर्नाटक में भी इस दिशा में काफी प्रगति हुई है।

### राजनीतिक प्रक्रियाएं

पंचायतों में महिलाओं के लिए आरक्षण ने औरतों को आगे बढ़ने का एक अच्छा मौका दिया है। महिला समाख्या जी जान से इस मुद्दे पर काम कर रही है। महिला आधीनता के सवाल से निपटने का यह बहुत अच्छा ज़रिया है। यह सही है कि इस आरक्षण का फ़ायदा मर्द उठाने की कोशिश कर रहे हैं। पंचायत में अपनी पत्नियों को कठपुतली बनाकर बिठा रहे हैं। इसीलिए महिलाओं में राजनैतिक चेतना लाने की ज़्यादा

जरूरत है। महिला समाख्या इस दिशा में कार्यशालाएं आयोजित कर रही है। महिला-संघ गांवों में दबाव समूह के रूप में भी काम कर रहे हैं, ताकि पंचायत सदस्य प्रभावशाली काम करें। औरतों को राजनैतिक मुद्दों पर सक्रिय करना अब महिला समाख्या के काम का हिस्सा बन गया है।

### न्याय और आदर

महिला संघ की औरतें किसी भी शारीरिक हिंसा और अन्याय के मुद्दे पर उठ खड़ी होती हैं। न्याय और सम्मान पाने की लड़ाई औरतों के सशक्तीकरण का अहम् हिस्सा है। महिलाओं के साथ होने वाली शारीरिक हिंसा व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि सामाजिक समस्या है। उत्तरप्रदेश के सहारनपुर जिले में तो इस संघर्ष ने आन्दोलन का रूप ले लिया है। उत्तरप्रदेश के ही टिहरी क्षेत्र में शराबखोरी के खिलाफ़ आन्दोलन चल रहा है। इसी प्रकार के आन्दोलन की रपट कर्नाटक से भी मिली है। अब औरतें अदालतों, पुलिस और दफ्तरों तक जाती हैं। यदि फिर भी बात नहीं बनती तो खुद शराब की दुकानों, कारखानों पर धरने देती हैं। जन आन्दोलन चलाती हैं। इस प्रकार महिला समाख्या के महिला संघ कई रास्तों से सशक्तीकरण पाने की कोशिश कर रहे हैं। सशक्तीकरण कोई मंज़िल नहीं, एक यात्रा है। महिला समाख्या की शक्ति यात्रा जारी है। □

**अधिकार उन्हीं को मिलते हैं**

**जो संघर्ष करते हैं।**